International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 21-04-2019; Accepted: 22-05-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 48-50

अनूप अशेष के नवगीतों में समृद्यता

डॉ0 बीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी
ग्राम+पो0, भैंसवार, जिला–सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
अनूप अशेष के नवगीतों का अध्ययन एवं रसास्वादन करने से एक ऐसी अद्भुत अनुभूति होती है जो गीतों को नवीन कला एवं दिशा से अभिभूत रहती है –पॉचवे छठवें दशक के संधिकाल में जब हिन्दी कविता अनेक धाराओं और वर्गो में विभाजित हो चुकी थी, तथा अनेक नामों से अभिहीत होने के कारण किसिम किसिम की हिन्दी कविता के रूप में पहचानी जाने लगी थी, ऐसे समय में अनूप अशेष ने नवगीत को सही दिशा दी इनका जन्म 07 अप्रैल सन् 1945 ई. को ग्राम सोनौरा, जिला सतना, मध्यप्रदेष मे हुआ था । इन्होनें हिन्दी से स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की । 'लौट आयेगें सगुन पंछी' 'वह मेरे गॉव की हॅसी थी' नामक नवगीत संकलन (1980) में प्रकाषित हुआ ।

मूल शब्दः भारतीय सुसंस्कृत, स्त्री संवेदना।

प्रस्तावना
अनूप अशेष नयी कविता और नवगीत में कोई तात्विक विभेद स्वीकार नहीं करते है । उनका मानना है कि –'नवगीत कविता की किसी पूरक विधा के रूप में नहीं बल्कि आदमी को जिन्दगी के सभी मूल्यों, पक्षों के साथ अपनी अलग शक्ल में खडा हुआ है '।
यद्यपि कवि का मन्तव्य कविता और नव0गीत के बीच कोई विभाजन रेखा खींचना नहीं है अपितु नवगीत के मूल तथ्यों को स्पष्ट करता रहा है । जहॉ तक पारस्परिक गीत और अगेय कविता का प्रष्न है, तो उसमें विच्छिन्नता के कारण भी नवगीतकार उपर्युक्त बिन्दुओं को ही स्वीकार करता है । और सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों को नवगीत में ही उपस्थित देखता है ।
अनूप के गीतों की भाव–भंगिमा नूतन है । सत्य नवीन रस का संचरण करता है और नूतनता का अहसास दिलाता है । यह अहसास किसी दूरागत वंशी की धुन नहीं होती, व्यक्ति के आसपास की उसकी अपनी कियाऍ और अपने परिवेश की उपज होती है । जहॉ तक नवगीतों के लोक पक्ष की ओर मुडने का सवाल है, इस संदर्भ में कवि आधुनिकता सापेक्ष दृष्टिबोध का अबलम्ब लेता हुआ प्रतीत होता है । क्योंकि जहॉ भी रचनात्कता को मोड देना होता है, वहॉ उसके मूल में कुछ कारक अवश्य होते है । जैसा कि नवगीतकार मानता है –'कविता जहॉ ठहरने या स्वयं को दुहराने की स्थिति में पहुॅचने लगती है, तो उसे लोक पक्ष की ओर, लोक–गीतों की ओर देखना ही पडता है । आज की बाद–ग्रस्त प्रतिबद्वता के छद्म आयातित मुहावरों वाली कविताओं के बीच नवगीत उसी लोक गंध के साथ उपस्थित है ।'
यहॉ स्पष्ट रूप में नवगीतकार ने छद्म आयातित प्रवृति के खिलाफ नवगीत को भव–भूमि प्रदान की है । इन्होने अपने नवगीतों में सामान्य जन की भोगी हुई अनुभूतियों और वर्तमान के

//1//

यथार्थ धरातल पर उगे हुए नानाविध पुष्प–पत्रो को ही समाहित किया है । ये अपने नवगीतों को ग्राम्य जन के अत्यन्त ही समीप ले जाने में सफल हुए है । 'वह मेरे गॉव की हॅसी थी' नामक नवगीत संकलन का एक वक्तव्य काफी होगा ।
'अपनी संस्कृति की पहचान विकसित करना, जिसमें हमारी जातीय स्मृतियों और समकालीन संशयों दोनों का किसी उत्तेजन सन्तुलन और सम्बंध में विन्यस्त किया जा सके, इसके लिए शायद नवगीत की एक मात्र विकल्प रह गया है ।'
शिल्प में भी अनूप अशेष ने सुरूचिता और सदाशयता का निर्वहन किया है । इनकी रचनाओं में शिल्पगत उपस्कर बिम्ब, प्रतीक, उपमान, आदि भी सर्वथा नवीन और अछूते है । ये लयों के पुरावर्तन और छन्दों की पुनप्रतिष्ठा के साथ जुडते हुए कहते है
'''मुक्त छंद की एक रसता औश्र यांत्रिकता से छुटकारा छंद की वापसी से ही हो सकती है ˙ छंद पर पुर्नदृष्टि करना उन लयों की ओर फिर लौटना है, जिनसे हमारी पुरानी स्मृति होती है ।''
इस तरह अनूप अशेष कथ्य और शिल्प दोनों ही स्तरों पर तार्ज दीख पडते है । इनके अनुभव की तलस्पर्शी संवेदना ने लयात्मकता के सहारे युगबोध को काफी विस्तार दिया है । इनमें से कुछ गीत सौंदर्यपरक और जिजीविषापरक है, तो कुछ में जीवन का खुलापन है तो कुछ में चुभन और कुछ में जीवन के अंतर्विरोधों से जुझने की अपार–षक्ति निहित है । इनके नवगीतों का विश्लेषण करने पर निम्बनवत दिखलाई पडती है –

1. लोकत्व प्रधान नवगीत
2. यथार्थ परक चेतना से समन्वित नवगीत
3. सौन्दर्याभिधायक नवगीत

लोकत्व प्रधान नवगीत –: लोक–परिवेश एवं लोक–संस्कृति
अनूप अशेष के नवगीतों में ये दोनों ही तत्व अपनी सम्पूर्ण विशिष्टता के साथ दिखायी पडते है । लोक–परिवेश अपने कलेवर में प्राकृति परिवेश जैसे–नदी–नाले, पहाड, वनस्पतियॉ, मैदानी परिवश एवं फसलों आदि को समेटे हुए है । जबकि लोक–संस्कृति से अभिप्राय मनुष्य के रहन–सहन, वश–भूषा, तीर्थव्रत, पूजा–पाठ, शादी विवाह के रस्मों–रिवाज, लोकगीत, लोक–कथा, जादू टोने, शकुन–अपशकुन आदि है।
अनूप अषेष के नवगीतों में इन तत्वों को समग्र रू॰ में उनके नवगीत संग्रह ''वह मेरे गॉव की हॅसी थी'' में देखा जा सकता है ।
ऑचलिकता किसी भी कवि की अपनी पहचान होती है । वह अपने कथ्य को विशेष सौन्दर्यबोध से सम्पन्न बनाने तथा सही एवं सटीक प्रस्तुति के लिए प्राकृतिक तत्वों का सहारा लेता है ।'सरसों','तेरा बस जींजरा' ,'हवा बडी गुस्सैल', 'फाल्गुनी निबंध मेरा गॉव', आदि नवगीातें में अनूप अशेष ने इस तरह की

//2//

अभिव्यक्ति का सहारा लिया है । ऑचलिक तत्वों को अभिव्यक्ति का विषय बनाते समय इनके प्रतीक इतने टटके, धारदार एवं पैने होते है, जो केवल अपने ग्राम्यांचल का ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण दश की तस्वीर को सामने लाकर खडा कर देते है । जिससे प्राकृतिक परिवश के साथ सम्बंधित क्षेत्र की विशिष्टताएँ और विविधताएँ भी नवगीतों में उतर आती है । उदाहरण दृष्टव्य है–

चलते चलते सूँध गई है/हवा अकेलापन/दुपहर की
चुप्पी/बैठी है/खाली खाली मन/नागफनी के कॉटे/
पककर/घर में खूब हॅसे ।

संदर्भ क्रं–01, (वह मेरे गॉव की हॅसी थी)

यहॉ 'हवा का अकेलापन सूँघना' बिखरते जीवन मूल्यों की ओर संकेत है । 'नागफनी के कॉटे का घर में पककर हॅसना, अन्तर्कलह और परस्पर के विद्वेष भावना नवगीत में नवगीतकार ने गॉव का जो यथार्थपरक चित्र खींचा है, वह सर्वथा हृदयावर्जक एवं स्पृहणीय है–

फागुनी निबंध मेरा गॉव/मन का अनुबंध मेरा गॉव/महुए की
गुलमोहर के फूल/ऑख–भरी पगडंडी/गमछे में धूल/झउए की
गंध मेरा गॉव ।

संदर्भ क्रं–02, (नवगीत दशक–दो, पृ.43)

इसमें राग–रंग और मस्ती में डूबे गॉव के चित्र को प्रस्तुत करने के लिए कवि ने 'फागुनी निबंध' प्रतीक का प्रयोग किया है । और गॉव की प्राकृतिक स्थिति को दिखलाने के लिए 'मुहए की कूच','गुलमोहर के फूल', झउए की गंध, पकी बाली सी धूप, नइहर से हरे खेत, पीहर सी मेउ, बरगद का पेंड, आदि प्रकृति के वाहक तत्वों का प्रयोग कवि ने किया है ।

ऑचलिकता प्रधान नवगीतों में कवि ने जिन प्रतीकों और अप्रस्तुतों का प्रयोग किया है, उनमें धूप के ताले, फूल के ताले, फूल के वन, रेशम के ठिकाने, रात से काले दिन, पिपरहा धूरे, सूनाघाट, नीली झील, फेन सा ठहरा समय, पीपल बरगद नीम ठहेरी, ठण्डी नदी, जागता जंगल, काले पत्थरों की धूल, एक मुट्ठी रेत गीली आदि मुख्य है । साथ ही 'पाले' सरसों , अरहरी, दरख्त, नदी, झरने , सांझ–भोर, प्रभाती, झील, लहर, करताल, आदि शब्द भी दर्शनीय है ।

ऑचलिक भव–बोध के साथ लोक–परिवश का एक अन्य पहलू खेती–बारी फसलों आदि से भी जुडा हुआ है । इन तत्वों को भी नवगीतकार ने बडी ही संजीदगी के साथ उतारने का प्रयास किया है–

फूली पीली सरसों/ऐसा लगता बिना तुम्हारे हुए खेत में बरसों/
भॉटा फूल रंग में बोरे लइके अलसी क्यारी/ऊंचा डीह पिपरहा घूरे/
मसूरीं दीठ उतारी/मन में पाला लगे अरहरी/सूरज छिपे मदरसों/ //3//

संदर्भ क्रं–03, (नवगीत दशक दो, पृ.–35–36)

उर्पयुक्त पंक्ति में विभिन्न अप्रस्तुत कथनों के माध्यम से 'सरसों' 'भांटा' 'अरहर' 'मंसूरी' आदि फसलों की ओर संकेत किया गया है ।

अनूप अशेष ने लोक–परिवेश के सफल अंकन के साथ ही साथ लोक–संस्कृति को भी अपने नवगीतों का प्रमुख बिंदु मानकर चित्रण किया है । लोक संस्कृति प्रधान इनके नवगीतों में 'षहर नहीं आना', 'कथानक' आदि को सम्मिलित किया जा सकता है । इन नवगीतों में कवि के लोक–संस्कृति ने भिन्न–भिन्न कार्यो और त्योहारों को अंकित किया है ।

सूर्यमुखी होकर भी हम/कजरौटे पारते रहे /इस पहाड सी
बस्ती में/कुछजलते घोंसले दिखे/लोगों के लिए हुए
गीले क्षण/हम अपनी बॉह में लिखे/छल के ही हाथों में /
अपने को वारते रहे ।

संदर्भ क्रं.–04, (वह मेरे गॉव की हॅसी थी , पृ. 30)

उर्पयुक्त नवगीत में सूर्यमुखी होकर, कजरौटे पारना, लोक–संस्कृति की ओर संकेत करता है । सूत बुने त्यौहार, तिथि त्योहार, पाने के बीडे, पान पतोखी तीज कजलिया, दिया देवारी, सूरज रैना, आदि लोक–संस्कृति परक शब्दों का कवि ने प्रयोग किया है ।

लोक जीवन की वेदना और विसंगतियॉ

अनूप अशेष ने अपने नवगीतों में लोक–परिवेश और लोक–संस्कृति के यथार्थपरक चित्रण के साथ ही लोक–मानव की बदहाली, जीवन –संघर्ष में आने वाली विद्रूपताएँ विसंगतियों आदि का भी चित्रण किया है । 'कथानक' 'तेरा बस पींजरा' 'हिनहिनाता आदमी' आदि नवगीतों में इस तरह का चित्रण देखा जा सकता है ।

एक निम्नवर्गीय परिवार की स्थिति यह होती है कि वह दिन भर हाड–तोड परिश्रम करता है । किन्तु इसका परिणाम सुखमय न होकर संवेदना की पराकाष्ठा तक पहुंच जाता है करूणाद्र हो जाता है कर्ज से लदा यह परिवार कुचले हुए तिनके के समान सर्वदा एकसा ही रहने के लिए बाध्य है । लोक मानव की यह बदहाल स्थिति 'कथानक' शीर्षक नवगीत में देखी जा सकती है ।

'खेत में खटता पिता/घर/बंधा मन/मा बहन/कच्ची
गिरस्थी/चुका ईधन/सुबह/ऋण खाते तगादे ।

पॉव का कुचला हुआ तिनका, पेट का फोडा, ओठ का सूखा मानक, शोक की पोशाक में लिप्टी हुए बस्ती, गोबर सनी चूडियॉ, पत्तल भरी महेरी, आदि शब्द लोक–जीवन की विसंगतियों को रूपायित करते है //4//

यथार्थ परक चेतना से समन्वित नवगीत

नवगीत की एक प्रधान विशेषता उसका यथार्थवादी दृष्टिकोण यरहा है`। अनूप अशेष ने भी अपनी रचनाओं में जीवन की विसंगतियों को, क्रूर विडम्बना को, व्यक्ति के दुहरेपन भरे व्यवहार को, यांत्रिकता के प्रभाव से उत्पन्न पुराने मूल्यों को टूटन को, सामाजिक षडयंत्र को और मनुष्य की निरर्थकता को उरेहा है । 'लौट आयेंगें सगुन पंछी' और 'वह मेरे गॉव की हंसी थी' के रचनाकार ने आधुनिक मनुष्य की बिखरती संवेदनशीलता, मुखौटावादी सभ्यता के पोषक अनुयायियों और स्वार्थ लिप्सू परम्परा के पोषी लोगों पर बडा ही करारा प्रहार किया है ।

लोग घुनती सीढियों पर चढे है /
भीख के कुछशब्द/कुछ रटे से नाम/नाश्ते की मेजपोशों
प्र कडे है/बोतलों में उफनती है क्रांतियां/बंद कमरों में /
हाथ अपने जेब में डाले/व्यवस्था के घरों में.....मरे चेहरे/
नये फ्रेमों में मढे है ।

संदर्भ कं. 05, (वह मेरे गॉव की हॅसी थी, पृ.37)

महानगरीय और ग्रामीण परिवेश

नवगीतकार ने ग्रामीणों और महानगरीय मूल्यों में परस्पर विच्छिन्नता की स्थिति को रेखांकित करने का प्रयास किया है । गॉव जहॉ भोलापन, शुचिता और शुद्वता सौम्यता का वाहक है, वहीं शहर विषैले धुंएं, गंदगी एवं गंदी राजनीति, संस्कृति और सभ्यता के खिलाफ आरचण और विकृति का पर्याय बन चुका है । कवि ने इन दोनों पक्षों में व्याप्त असन्तुलन का जिक्र किया है । नवगीतकार अपने गॉव अपनी धरती को सर्वथा पवित्र और पुष्टिकारक मानते हुए उससे अलग न होने को सलाह देता है । पलायनवादी प्रवृत्ति को रोकने तथा शहरों की कृत्रिमता का वर्णन कवि का मुख्य ध्येय रहा है उदाहरण दृष्टव्य है

घर की किल्लत भूख बीमारी /हंस कर सह जाना /भैया /
शहर नहीं आना .....।
शील शरम सब यहॉ बिकाऊ/ बम्बईया अफसाना /भैया/
शहर नहीं आना ।

संदर्भ क्रं–06, (नवगीत दशक –दो, पृ.39–40) **//5//**

इसमें नवगीतकार घर की तमाम आपदाओं और कष्टों को सहने के बावजूद भी वहीं रहने की सलाह देता है, किन्तु शील संकोच छल–छद्म और कृत्रिमता यांत्रिकता और घूल धुंएं से भरे शहर में जाने की कतई सलाह नहीं देता । एक ओर नवगीतकार महानगरीय परिवेश की कलई खोलने की मजबूर हो जाता है, वहॉ दूसरी ग्राम जीवन के सुंदर परिवेश का मनोरम चित्र खींचता है ।

गॉव हमारा/परदादा की मोह मुहब्बत का/पान पतौखी/
तीज कजलियॉ/रिष्तों मोहब्बत का .....।
गॉव हमारा/चना चवैना/खेतों धानो का /पूजा परछन/
धोती पगडी/बिरहा तानों को ।

संदर्भ क्रं –07 (नवगीत दषक–दो, पृ. 39–40)

नवगीतकार अनूप अषेष के अनुसार ग्रामीण सभ्यता की यह पावनता महानगरीय परिवेष से किसी भी स्थिति में तुलना नहीं किया जात सकता है । ग्राम्य परिवेष में एक अलौकिक आनंद की अनुभूति होती है जो पूरी तरह से प्राकृतिकता से परिपूर्ण होता है ।

संदर्भ सूचि

1. संदर्भ क्रं0–01–वह मेरे गॉव की हंसी थी ।
2. संदर्भ क्रं0–02–नवगीत दषक दो पृ. क्रं. 43 । ग्राम+पो0 –भैंसवार, जिला–सतना,
3. संदर्भ क्रं0–03–नवगीत दषक दो पृ क्रं. 35–36 । (मध्य प्रदेष)
4. संदर्भ क्रं0–04–वह मेरे गॉव की हंसी थी पृ.क्रं. 30 । संदर्भ क्रं0–05–वह मेरे गॉव की हंसी थी पृ.क्रं. 37 ।
5. संदर्भ क्रं0–06–वह मेरे गॉव की हंसी थी पृ.क्रं. 41–42 ।